खोजबीन के लिए

कविता-1 : बहते हुए पानी ने
पत्थरों पर निशान छोड़े हैं
अजीब बात है
पत्थरों ने पानी पर
कोई निशान नहीं छोड़ा

कविता-2: पानी की बूंद
पानी की एक नन्ही बूंद,
धरती पर जीवन का छंद।
फूलों को देती है रस,
किसान को देती है उत्कर्ष।
नदियों में लहर बन बहती,
झीलों में शांत सा रहती।
प्यासे के अधरों की प्यासी,
जीवन की सच्ची अभिलाषी।
हे जल! तू अमृत सा प्यारा,
तेरे बिना जीवन है बंजारा।

कविता-3: बारिश आई
काले मेघ घिरे गगन पर,
बरखा आई मधुर पवन पर।
बूंदें नाचें मोती बनकर,
धरती झूमी खिलखिलाकर।
खेत हरे-भरे हो जाते,
फूलों में रंग नए आते।
नदी बढ़ी उमंग से बहती,
हरियाली गान खुशी कहती।
हे बारिश! तू जीवन दान,
तेरे बिना सूना संसार महान।

कविता-4 : नदी का गीत
मैं हूँ नदी, निरंतर बहती,
जीवन की धारा में रहती।
कभी शांत, कभी उग्र प्रवाह,
हर पल देती नया सन्देश।
गाँव-गाँव में जल पहुँचाती,
खेती की प्यास बुझाती।
शिशु की तरह कल-कल करती,
धरती माँ को हरियाली धरती।
मेरा सम्मान करो मानव,
मैं हूँ जीवन का सच्चा भाव।

कविता-5 : पानी की पुकार
पानी बोला "मुझे बचाओ,
हर बूंद में जीवन पाओ।
मत करो यूँ मेरा अपमान,
मैं ही तो हूँ धरती की जान।"
नदियों, तालों, झरनों से,
मिलती आशा जीवन के सपनों से।
यदि न रहा तो जीवन रोएगा,
सूखा संसार कौन संजोएगा?
सुनो मानव! मेरी अरदास,
मुझसे ही है जीवन खास।

कविता-6: जल है तो कल है
नीला आकाश, हरी जमीन,
जल से ही है सबकी जीन।
पेड़-पौधे, पशु, इंसान,
सबकी साँसों का मैं सामान।
मत करो बर्बादी इतनी,
बचाओ धरती की दौलत जितनी।
बूंद-बूंद अमृत समझो मुझको,
जीवन का आधार मानो मुझको।
जल ही जीवन, यही सच्चाई,
इसमें ही सबकी भलाई।